महान चिंतन को व्यज़्त करने में वो कभी थकते नहीं थे। विवेकानंद का दूसरा रूप भारत में दिखा। वह जब भारत के अंदर बात रखते थे तो देश की बुराईयों को लगातार कोसते थे। भारतीय लोगों की दुर्बलताओं पर सीधा प्रहार करते थे। वह उस समय जिस भाषा का प्रयोग करते थे उस भाषा का प्रयोग हम अगर आज करें तो लोगों को आश्चर्य होगा कि हम ज़्या बोल रहे हैं। वो समाज के हर बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाते थे। उस समय के समाज की कल्पना कीजिए जब पूजा पद्धति को बहुत माना जाता था। ऐसे समय में 30 साल का नौजवान खड़ा होकर कह दे कि पूजा-पाठ करने और मंदिर में बैठे रहने से कोई भगवान मिलने वाला नहीं है। जन सेवा को प्रभु सेवा मानों, जनता जनार्दन गरीबों की सेवा करो, तब जाकर प्रभु प्राप्त होगा। उनके अंदर कितनी बड़ी ताकत थी। वह संत परंपरा से थे, लेकिन जीवन में वह कभी गुरू खोजने नहीं निकले। यह हमारे सीखने और समझने का विषय है। वह सत्य की तलाश में थे। महात्मा गांधी भी जीवनभर सत्य की तलाश से जुटे रहे। उनके अंदर वो कौन सा लौहतत्व होगा, वह कौन सी ऊर्जा होगी जिसमें यह सामर्थ्य पैदा हुआ। इसलिए वर्तमान समाज में जो बुराइयां हैं, ज़्या उसके खिलाफ हम नहीं लड़ेंगे। ज़्या उसे हम स्वीकार कर लेंगे। अमरीका की धरती पर विवेकानंद जी के ब्रदर और सिस्टर सज़्बोधन पर हम खुश हो उठते हैं, लेकिन मैं नौजवानों से विशेष रूप से कहना चाहूंगा ज़्या हम नारी का सज़्मान करते हैं? हम लड़कियों को आदर भाव से देखते हैं? यदि यह भाव हमारे मन में नहीं है तो हमें ताली बजाने का हक नहीं है। हमें 50 बार सोचना है। विवेकानंद जी कहते थे जनसेवा प्रभु सेवा। अब देखिए एक इंसान 30 साल की उम्र में पूरे विश्व में ऐसा जय-जयकार करके आया है। उस गुलामी के कालखंड में दो व्यज़्तित्व ने भारत में एक नई चेतना, नई ऊर्जा प्रकट की थी। रविंद्रनाथ टैगोर को जब नॉबेल प्राइज मिला और जब स्वामी विवेकानंद जी का शिकागो में सज़्बोधन हुआ। दोनों बंगाल की संतान थे। कितना गर्व होता है जब हम दुनिया को बताते हैं कि हमारे रविंद्रनाथ टैगोर ने भारत, श्रीलंका और बांग्लादेश का राष्ट्रगीत बनाया था। दुनिया में भारत सबसे युवा देश है। 800 मिलियन लोग इस देश में उस उम्र के हैं जो उम्र विवेकानंदजी की शिकागो में भाषण देने के दौरान थी। जिस देश की 65 प्रतिशत जनसंज़्या युवा हो उसके लिए